सूक्ष्म में मोक्ष

इंसान के दो रूप हैं–स्थूल और सूक्ष्म, देह और देही।

स्थूल प्रकृतिमय है और सूक्ष्म पुरुषमय।

प्रकृति और पुरूष के मिलन से ही जीव है अत: जीव द्वैत है और अद्वैत भी। इस विषय को समझना ही ज्ञान है और अगर न समझ सके तो अज्ञान है।

स्थूल में काम–भोग है और सूक्ष्म में मोक्ष। केवल स्थूल पर दृष्टि रखने से काम और भोग कभी–कभी मिलते हैं लेकिन सूक्ष्म पर नजर रखने से ये दोनों शाश्वत रूप से मिलते हैं। जो मोक्ष प्राप्त करता है, उसी को इहलोक के भोग भी मिलते हैं।

अत: जीव का हित यह जानने में है कि इस प्राणी के दो रूप हैं–स्थूल और सूक्ष्म। यह सब ध्यान द्वारा ही साध्य होता है, ध्यान आनापानसति द्वारा ही साध्य होता है।